19.2.68 रात्रीक्लास ओमशांति

यह गीतों आदि की महिमा भक्ति में गाई जाती है। ज्ञान में शुन हो जाते। आत्मा जाये बाकी रहती है। जो कुछ भक्ति में किया जाता है वह ज्ञान में नहीं। भाई–बहन बन बाप से ज्ञान ले फिर अकला निल में चला जाता है। वाणी से परे। उसमें कोई चीज अच्छी नहीं लगती। निर्वाण वानप्रस्थ में जाना है। शांति मे विचार–सागर–मंथन करना, उसमें आवाज़ की कोई बात नहीं। गुप्त सब कुछ। यह गायन आ हिरस अजन बच्चों में है। शिव की महिमा गाना जैसे भक्ति हो जाती। यहां तो शरीर का भान भी छोड़ना है। सिर्फ आत्मा को ,बाप को याद करना है। आत्मा शरीर का मालिक है। अभी हम वाणी से परे जावें। यह गीत आदि भी वाणी है ना। इनसे भी दूर जाना है ;परंतु इसमें टाइम लगता है। मनुष्य शांति मांगते हैं ना। तुम कहेंगे हमारा स्वधर्म ही शांत है। घर जाना है?जैसे बाप रचता है रचना के आदि,मध्य,अंत को जानते हैं तो हम भी बाप द्वारा जानते हैं। जो न जानते हैं गोया नास्तिक हैं। तो बाप कहते हैं धंधा आदि करते आंतरिक हो स्वधर्म में रहो। बाप भी शांत....आते हैं। बच्चों को शांति में ले जाते हैं। तुम तैयारी करते हो स्वधर्म में जाने की। अभी समझना पड़ता है। फिर तो प्रारब्ध में जावेंगे। वहां ज्ञान नहीं। पद मिल गया, खतम। बाकी अभी यह मेहनत है। वानप्रस्थ वा मुक्ति एक ही है। जीवनमुक्ति अलग है। तो ऐसे2 करते हम आत्मा परमात्मा बाप को ही याद करते रहेंगे। आत्माएं (सब) हैं पार्टधारी। पार्ट पूरा होता है तो आत्माएं जाकर परमात्मा से मिलेंगी। पुरुषार्थ ही करते हैं मुक्ति के (लिए)। घर जरूर जाना पड़े। सबको समझाना है। शांतिधाम, सुखधाम,दुःखधाम। अभी पुरुषार्थ कर रहे हैं निर्वाणधाम जाने लिए। फिर जीवनमुक्ति में आना है। यह तो गीत आदि बेहद के बाप पसंद नहीं करते हैं। तो इनको भी पसंद नहीं आती। बाप कहते हैं हमारे मिसल वानप्रस्थी बने। यह भी वानप्रस्थी बनने पुरुषार्थ करते हैं। बाप कहते हैं वानप्रस्थी बनो। नंगे आये थे,नंगे ही जाना है। अभी शरीर साथ है। बाप को आना पड़ता है सबको आप समान बनाने लिएए। आवाज़ से भी परे जाना है। प्रैक्टिस भी करनी हैं। बाप कहते हैं गृहस्थ व्यवहार में रहते मुझे याद करो। बाप का धंधा ही है सबको निर्वाणधाम ले जाने का। तुम समझते हो हम जावेंगे जरूर। इसलिए बाबा को डायलॉग,ड्रामा आदि कुछ भी अच्छी नहीं लगती। हमको तो जाना है। बाबा से योग रखने से हम पावन बन जावेंगे। शांति के लिए ही सब पुरुषार्थी.... हैं। निर्वाण में शांति फिर रामराज्य स्थापन होते हैं। वहां भी शांति है। तिक2 को सुनकर मनुष्य जाते हैं। धारणा कुछ भी नहीं होती है। बातें ही थोड़ी बतानी चाहिए। यह दुःखधाम, वह सुखधाम। वह शांतिधाम। तुम.....जाते हो? बाप को याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। इसलिए गाया जाता है मुक्ति और जीवनमुक्ति। .....ही अल्फ और बे बादशाही। चक्र (तो) फिरता ही रहता.....। तुम ब्राह्मणों की आयु बहुत छोटी है। आज ब्राह्मण बने हो कल देवता बन जावेंगे। तुम बच्चों को अपने स्वधर्म में टिकना है तो विकर्म विनाश हो जावेंगे। मनुष्य कितना भटकते हैं मेले मलाखड़ों में। कितने मेले लगते हैं। तुम कितना शांति में रहते हो। सिर्फ सर्विस करने लिए माथा मारना पड़ता है। जितना2 शरीर के भान से छूटते जावेंगे फिर खुशी का पारा चढ़ता जावेगा। इस दुनियां से दिल नहीं लगेगी। तुम बच्चों को तैयार हो रहना है। उठते–बैठते अंदर जैसे कि नफरत है। हम पुरानी दुनियां से जाते हैं अपन नई दुनियां राजधानी में। हम विश्व की राजधानी अपने लिए स्थापन कर रहे हैं। कितना नश रहना चाहिए। हरेक अपने नशे को समझे। मालूम पड़ता है सर्विस से। यह भी समझा सकते हो। पतित–पावन आये हैं अपने घर ले जाने। सिर्फ कहते हैं मुझे याद करो तो पाप कट जावेंगे। फिर तुम हमारे साथ चलेंगे। कहते हैं इस शरीर से ममत्व मिटा दो। बच्चे सर्विस करते हैं तो बाप की दिल खुश होती है। टोली बनाकर भेज देवें। बच्चे मेहनत करते हैं तो दिल होती है बच्चों को टोली खिलाने। अच्छा, मीठे2 बच्चों को बापदादा का यादप्यार, गुडमार्निंग नमस्ते।

डायरैक्शन– त्रिमूर्ति शिव के स्टैम्प्स बाप.....ने बनवाई है। कोई बड़े2 आदमी, मिनिस्टर आदि वा राजाओं .....को लिटरेचर वा लेटर आदि भेजना हो तो यह उपर में लगाकर भेज सकते हैं। जिनको चाहिए तो मधुबन वा (बम्बई) से मंगा सकते हैं।